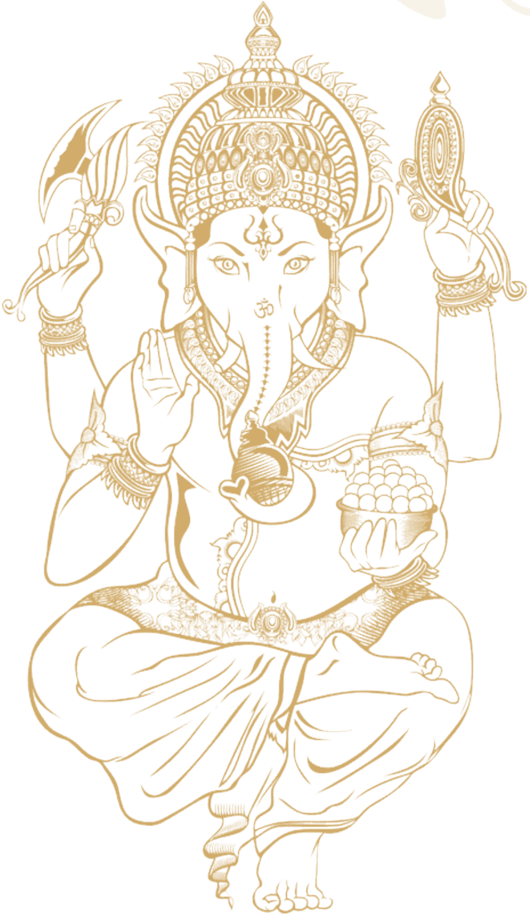

Master

10 Jan 2026

05:28 PM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120891101

तिथि 10/01/2026 **समय** 17:28:00 **वार** शनिवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:20
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	00:43:19 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:07:25 घं	योनि	व्याघ्र
सूर्योदय	06:55:52 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	17:28:51 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मूषक
मास	माघ	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	8	जन्म नामाक्षर	पे-पेशवा
नक्षत्र	चित्रा	पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
योग	सुकर्मा	होरा	सूर्य
करण	बालव	चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 7मा 1दि
मंगल
10/01/2026
12/08/2032

	10/01/2026
राहु	27/01/2027
गुरु	03/01/2028
शनि	10/02/2029
बुध	08/02/2030
केतु	07/07/2030
शुक्र	06/09/2031
सूर्य	12/01/2032
चन्द्र	12/08/2032

योगिनी
मंगला 0वर्ष 11मा 8दि
मंगला
10/01/2026
20/12/2026

	10/01/2026
पिंगला	19/01/2026
धान्या	19/02/2026
भ्रामरी	31/03/2026
भद्रिका	21/05/2026
उल्का	21/07/2026
सिद्धा	30/09/2026
संकटा	20/12/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			26:42:57	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			26:00:49	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	मित्र राशि	1.36	अमात्य	पितृ	वध
चंद्र			24:07:17	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	मित्र राशि	1.28	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	25:46:00	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	1.08	मातृ	भ्रातृ	वध
बुध		अ	19:10:42	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	सम राशि	0.93	ज्ञाति	ज्ञाति	वध
गुरु	व		25:52:07	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि	1.43	भ्रातृ	धन	विपत
शुक्र		अ	26:55:17	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	सूर्य	सम राशि	1.03	आत्मा	कलत्र	मित्र
शनि			02:33:56	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.43	कलत्र	आयु	विपत
राहु			16:06:23	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			16:06:23	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

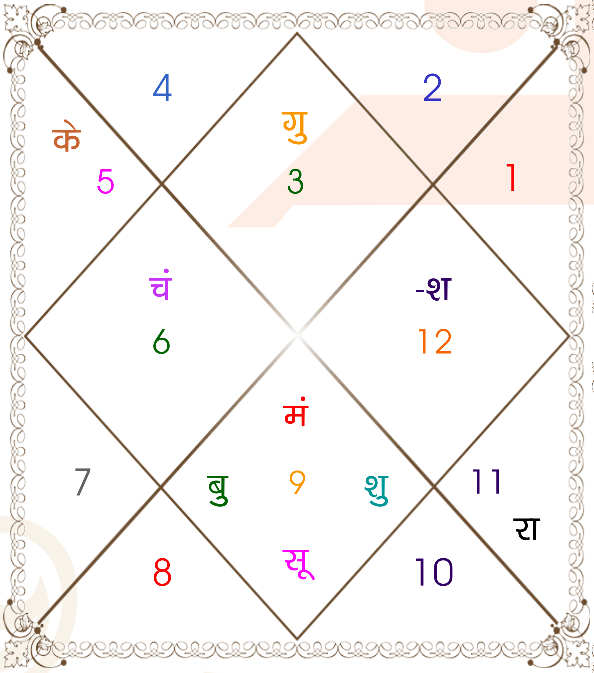

चन्द्र कुंडली

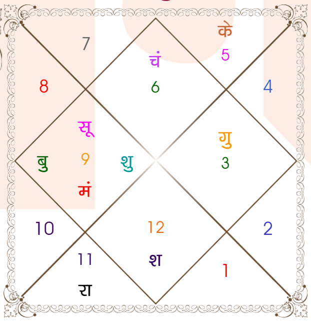

नवमांश कुंडली

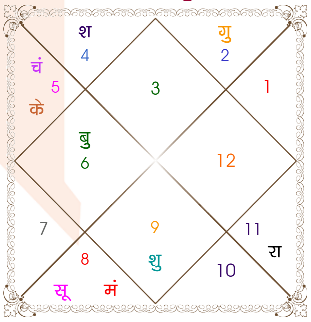

सर्वाष्टकवर्ग

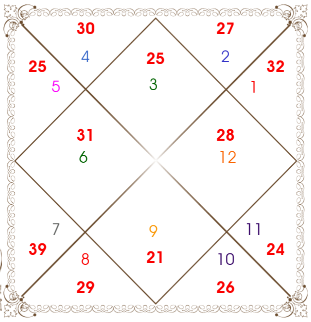

दशमांश कुंडली

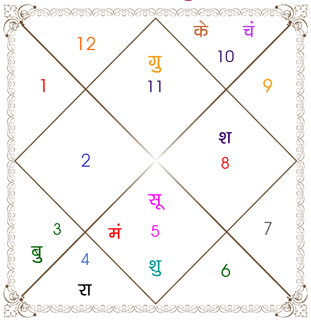

नक्षत्रफल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र, वर्ग मूषक तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ !पे! अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आपकी प्रकृति स्वभाव से ही धार्मिक रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अपार श्रद्धा व्याप्त रहेगी तथा इनकी आप श्रद्धापूर्वक पूजार्चना करते रहेंगे। आप अपनी पत्नी तथा पुत्र सहित संतुष्ट रहकर अपना जीवन यापन करेंगे। धनैश्वर्य तथा वैभव आदि का आपको कभी भी अभाव प्रतीत नहीं होगा इनसे हमेशा परिपूर्ण रहकर आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

आप नये नये वस्त्रों के हमेशा शौकीन रहेंगे तथा इनसे हमेशा परिपूर्ण रहेंगे साथ ही गले में माला पहनने के लिए भी आपका मन आकर्षित रहेगा। आपकी आंखे देखने में सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आप अपने मन की बात को हमेशा गुप्त रखेंगे तथा किसी अन्य व्यक्ति पर इसका भेद नही खुलने देंगे। इस प्रकार अपनी बातों को गुप्त रखना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। समाज से आपको पूर्ण मान तथा आदर की प्राप्ति होगी।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अपने पराक्रम तथा वीरता से हमेशा शत्रुओं को कुचलने तथा उन पर विजय प्राप्त करने वाले वीर होंगे। नीति शास्त्र के आप विद्वान होंगे तथा नीति संबंधी कार्यो में अत्यन्त ही निपुणता प्राप्त करेंगे। आप नाना प्रकार के वस्त्रों के धारण करने के शौकीन रहेंगे फलतः आपकी वेशभूषा में विभिन्नता का पूर्ण समन्वय रहेगा। शास्त्र ज्ञानोपार्जन में आप सर्वथा रूचिशील रहेंगे तथा इसमें आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी अर्थात् शास्त्रों के ज्ञान में आप पूर्ण रूपेण पारंगत रहेंगे।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्‌भुत बुद्धिवाला होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीङा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्री वर्ग के प्रति आकर्षित रहेंगे तथा इनके प्रति आपके हृदय में अनुराग की प्रबलता रहेगी। आपके हाथों की लम्बाई भी अधिक होगी तथा शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त कान, आंख, दान्त तथा मुखमंडल भी सुन्दर एवं मनोहर होंगे। आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा विभिन्न प्रकार की धार्मिक संस्थाओं से आपका संबंध रहेगा तथा इन संस्थाओं में आप उच्च पदों को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी वाणी प्रिय एवं मधुर होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। सत्य का आप प्रयत्नपूर्वक पालन करेंगे तथा शुद्धता का भी विशेष ध्यान रखेगे गन्दगी आपको पसन्द नहीं होगी। आप का मन धैर्यशाली होगा तथा आपके समस्त कार्यकलाप धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न होंगे। संसार के समस्त प्राणियों के प्रति आपके मन में करूणा एवं सहानुभूति व्याप्त रहेगी। आपकी परोपकारी वृति भी रहेगी तथा परोपकार संबंधी कार्यो में आप पूर्णसहयोग प्रदान करेंगे। आपमें आदर तथा क्षमाशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा भाग्य हमेशा आपका प्रबल रहेगा। लेकिन आपकी पुत्रों की अपेक्षा कन्या संतति अधिक मात्रा में होंगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारूदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जा तथा आलस्य से युक्त दृष्टि से गमन करने वाले होगे। जीवन में आप समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे। आपका शरीर भी दर्शनीय रहेगा। सत्य के अनुपालन करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आप कई प्रकार की कलाओं के जानने वाले होंगे तथा इनमें दक्षता भी प्राप्त करेंगे। शास्त्र के तत्वों का ज्ञानार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा धार्मिक वृति का पालन करते हुए हमेशा सर्वश्रेष्ठ रहेंगे। साथ ही किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन एवं मकान का आप उपयोग करते रहेंगे। घर से विदेश जाने के प्रति भी आप प्रयत्नशील रहेंगे तथा इसमें सफलता प्राप्त होगी।

व्रीळामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्वार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप महिला वर्ग को अपनी हास्य युक्त मुद्राओं तथा क्रियाओं से अपनी ओर आकर्षित करने तथा उन्हें प्रसन्न करने में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेंगे। समाज में अन्य लोगों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनम्र रहेगा अतः सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे साथ ही आप हमेशा अच्छे कार्यो को करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे परन्तु सौभाग्य हमेशा आपके साथ रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न तथा सिद्ध होंगे।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि हमेशा निर्मल रहेगी तथा लेखन कार्य के प्रति आप अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे फलतः काव्य लेखन में आप सफलता को अर्जित कर सकेंगे। आपका चित्त हमेशा शान्त रहेगा तथा चंचलता का उसमें सर्वथा अभाव रहेगा। परन्तु जीवन में आप यदा कदा नेत्र रोगों से व्याकुल रहकर कष्टानुभूति करेंगे। इसके साथ ही गुरूजनों की भलाई के कार्यों में भी आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।

गुरुजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आपकी प्रवृति विलास की ओर भी सक्रिय रहेंगी तथा समस्त विलासमय भौतिक पदार्थो का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में आप सफल रहेंगे। सज्जन तथा विद्वान लोगों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा इनको प्रसन्न करने में भी आप निपुण होंगे। दानशीलता का स्वभाव नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगा। वैदिक धर्म के प्रति आपकी परम निष्ठा होगी तथा पूर्ण रूप से जीवन में इसका पालन करेंगे। समाज के सभी वर्गो से आप के प्रिय एवं मधुर संबंध रहेंगे अतः समाज में आप खूब लोकप्रियता को प्राप्त करेंगे। नाटक तथा संगीत के आप अनन्य प्रेमी तथा शौकीन रहेंगे तथा आजीवन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इससे आपका संबंध रहेगा। आपका अधिकांश समय परदेश में ही व्यतीत होगा।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन के सम्पूर्ण महत्वपूर्ण सुखों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे आपकी वाणी अत्यन्त ही सुन्दर होगी तथा शास्त्रादि का भी आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रकृति कभी कभी अधिक बोलने वाली होगी आपके हृदय में दया एवं करूणा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आप एक वीर एवं साहसी पुरुष होंगे तथा साहसपूर्वक अपने अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही क्रोधित होने वाले होंगे। शारीरिक बल से आप सदैव परिपूर्ण रहेंगे।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकते हैं। देखने में आप अधिक सुन्दर होंगे। आप कभी कभी अत्यन्त ही कठोर वाणी बोलने वाले होंगे जो श्रोता को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगेगी। अतः यत्नपूर्वक आाको अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति से युक्त रहेंगे तथा किसी भी कार्य को आप स्वयं ही सम्पन्न करना चाहेंगे। अन्य लोगों का हस्तक्षेप आपको पसन्द नहीं होगा। साथ ही धन संचय करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी। आप एक प्रशिक्षित व्यक्ति होंगे तथा अच्छी बातों या गुणों को शीघ्र ही ग्रहण करने में आप सफल रहेंगे। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। परन्तु आप अपनी प्रशंसा अपने ही मुंह से अधिक करेंगे जिसका अन्य लोगों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य

सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य कोई भी शुभ या महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, नौकरी या पदोन्नति में असफलता, व्यापार में हानि या अन्य महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा बुधवार एवं गणेश चतुर्थी के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थों को श्रदा पूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा कार्य की सफलता में उत्पन्न व्यवधान दूर होंगे। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।